समाजिक क्रांति के पुरोधा आचार्य तुलसी

–डॉ. गिरिराज भोजक

भारत देश की पुण्य धरा को प्राचीन काल से ही अनेक ऋषि, मुनियों, विचारकों एवं प्रबुद्ध जनों ने अपनी ज्ञान धारा के अविरल प्रवाह में सिंचित, पोषित एवं पल्लवित किया है। ऐसे मनीषियों के चेतनापूर्ण चिंतन ने संपूर्ण मानवीय समुदाय को सदैव एक नवीन दिशा प्रदान करते हुए एक नवीन कालखण्ड का सृजन किया है और जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आगामी युगों के लिए एक आदर्श मानदण्ड के रूप में स्थापित हो गया।

ऐसे ही क्रांतिकारी धर्मपुरुषों में एक हैं आचार्य तुलसी, जिनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक संस्था के रूप में संपूर्ण विश्व को एक व्यापक दिशा बोध प्रदान कर रहा है। उनके अवदानों की एक दीर्घ एवं विशाल पंक्ति है जिसे मापना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। एक ओर धर्म, अध्यात्म एवं समाज तथा दूसरी ओर अध्यापन, काव्य, महिला सशक्तिकरण, आगम सृजना आदि विविध आयामों के माध्यम से उनकी 'युग प्रधान' अदर्श छवि के हम प्रतिपल साक्षी हैं। आचार्य तुलसी का अरूण आलोक मजदूर की झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक ही नहीं वरन् अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर संपूर्ण विश्व समुदाय को प्रज्ञा प्रकाश में आलोकित कर रहा है।

हर युग में धर्म एवं समाज का परस्पर अन्यानोश्रित संबंध रहा है। प्रत्येक युग के प्रमुख विचारकों संतों एवं प्रबुद्ध जनों ने समीचीन समस्याओं के समाधान हेतु साहित्य सृजन, व्याख्यानों, गोष्ठियों आदि साधनों द्वारा तत्कालीन सामाजिक दायित्व को स्पष्ट शब्दों में स्वीकारते हैं–"धर्म गुरुओं का दायित्व सामायिक, ध्यान, तपस्या, कीर्तन आदि की प्रेरणा के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों के परिष्कार एवं उनकी प्रतिष्ठा का भी है।" तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त दहेज प्रथा, घूंघट प्रथा, रूढ़िवादिता, जातिवाद, सतीप्रथा, मादक पदार्थ सेवन, अस्पृश्यता आदि के परिष्कार हेतु उन्होंने

केवल विचार ही नहीं दिये वरन् अनेक प्रयोगों, लघु आंदोलनों के माध्यम से सामाजिक क्रांति का शंखनाद किया।

महिला उत्थान की नितान्त आवश्यकता जताते हुए उन्होंने नारी एवं पुरुषों को अपनी-अपनी सीमाओं में रहकर एवं कर्त्तव्यों का पालन करने का संदेश दिया। आचार्य तुलसी की दृष्टि में सामाजिक क्रांति का प्रारंभ व्यक्ति से होना चाहिए समाज से नहीं और अणुव्रत गीत में भी वे इसी सत्य का संदेश देते हैं–

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।

आचार्य तुलसी समाज की महत्त्वपूर्ण एवं बुनियादी इकाई परिवार को मानते हुए संयुक्त परिवार प्रथा का समर्थन करते हैं। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की घुसपैठ को प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विघटन का प्रमुख कारण मानते हुए व्यक्तिवादी मनोवृत्ति, असहिष्णुता, संदेह, अहंकार, स्वार्थपरता के परिष्कार हेतु संयुक्त परिवार की आवश्यकता पर बल दिया। संयुक्त परिवार में शांत एवं सौहार्दपूर्ण सहवास हेतु प्रत्येक सदस्य में सहनशीलता, स्नेहशीलता, श्रमशीलता, पारस्परिक विश्वास की स्थापना को सर्वदुख निवारण का मार्ग बताया।

रूढ़ सामाजिक मान्यताओं के परिवर्तन हेतु शुद्ध साधनों की आवश्यकता एवं वैचारिक क्रांति को अधिक महत्त्वपूर्ण माना। नारी जाति को संपूर्ण समाज एवं राष्ट्र की चालक शक्ति के रूप में उन्होंने महिलाओं से लक्ष्मी तथा सरस्वती के साथ दुर्गा बनकर समाज में व्याप्त विध्वंसक शक्तियों के प्रति मुखर विरोध का आह्वान किया। वे नारी देह की अश्लील प्रस्तुति को नारी जाति के गौरव के प्रतिकूल मानते हुए कहते हैं–"मुझे ऐसा लगता है कि एक व्यवसायी को अपना व्यवसाय चलाने की जितनी आकांक्षा होती है शायद उससे भी अधिक कैमरे के सामने प्रस्तुत होने वाली उन महिलाओं के मन में ढेर सारा धन बटोरने की आकांक्षा उन्हें सभी सीमाओं के लंघन हेतु बाध्य करती है।"

आचार्य तुलसी ने जातिवाद का प्रबल विरोध करते हुए आवश्यकता को संपूर्ण मानवीय समुदाय के लिए एक कलंक बताया। जातिगत आधार समाज में फैली असमानता के लिए उन्होंने वैषम्य फैलाने वाले धर्माचार्यों को धर्मांधता छोड़कर पारस्परिक सौहार्द एवं सद्भावना हेतु सामाजिक जागरण हेतु प्रेरित किया। इसी प्रसंग में उन्होंने अपने प्रवास के दौरान उन मंदिरों एवं महाजनों के स्थान पर प्रवास के लिए स्पष्ट मना कर दिया जहां हरिजनों का प्रवेश निषिद्ध था। समाज में अर्थोपार्जन एवं अमीरी गरीबी से जुड़ी विसंगतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए बताया पूंजीपति वर्ग समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान हेतु अपने धन का सदुपयोग करे तथा आर्थिक दासता से मुक्त होकर धन के समान वितरण हेतु व्यवस्था परिवर्तन का आरंभ स्वयं अपने व्यवसाय से ही करें।

किसी भी समाज की युवा पीढ़ी को सामाजिक क्रांति का प्रमुख सूत्रधार बताते हुए उन्होंने श्रद्धाशील, सहनशील, चरित्रशील, कर्मशील युवा पीढ़ी के नवनिर्माण का संदेश दिया।

मद्यपान, गुटखा, भांग, हेरोइन आदि कुसंगतियों में फंसे युवकों में नशीले पदार्थों से वितृष्णा हेतु उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से देशव्यापती नशामुक्ति अभियान चलाया और युवाओं से समस्त विघटन मूलक प्रवृत्तियों से ऊपर उठकर समाज के नवनिर्माण हेतु तत्पर होने का आह्वान किया।

तेरापंथ के द्विशताब्दी समारोह (1959) की पुनीत बेला में उन्होंने अणुव्रत के माध्यम से 'नया मोड़' नामक जनआंदोलन का सिंहनाद फूंका। इस सामाजिक आंदोलन द्वारा दहेजप्रथा, मृत्युभोज, विधवा प्रथा, वैवाहिक आडंबर, सतीप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का प्रयास करते हुए संपूर्ण नारी जाति के उत्थान को समाज के नवनिर्माण की प्राथमिक कड़ी बताया। स्वस्थ समाज निर्माण की आधारशिला के रूप में मर्यादा, अनुशासन एवं परस्परता को अनिवार्य मानते हुए उन्होंने सुविधावाद एवं विलासिता को सामाजिक प्रगति हेतु बड़ा खतरा माना। उनके अनुसार आदर्श, निर्द्वन्द्व, शोषणयुक्त तथा ज्ञान, दर्शन चारित्र की त्रिवेणी से आप्लावित समाज ही वास्तव में संपूर्ण संतुलित विकास का प्रमुख आधार है। सामाजिक उत्थान के सामूहिक प्रयासों की परिणिति में उनके सान्निध्य में अनेक सामाजिक संस्थानों की नींव रखी गयी जो आज की सक्रियता से सामाजिक नव निर्माण के महनीय उद्देश्य में संलग्न है जिनमें अखिल भारतीय युवक परिषद्, अखिल भारतीय महिला मंडल, जय तुलसी फाउण्डेशन, आदर्श साहित्य संघ, अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, जैन विश्व भारती आदि प्रमुख हैं।

आचार्य तुलसी स्वस्थ समाज निर्माण का केन्द्र व्यक्तित्व विकास को मानते हुए वर्तमान शिक्षा पद्धति में मूल्यों की स्थापना, चरित्र निर्माण एवं संतुलित व्यक्तित्व विकास हेतु व्यापक परिवर्तन को आवश्यक मानते हैं। व्यक्तिशः संकल्पबद्ध नवीन समाज रचना के क्रम में पूज्य कालूगणी के जन्मदिवस फाल्गुन शुक्ला द्वितीया वि.सं. 2005 को सरदारशहर में अणुव्रत आंदोलन का उद्भव हुआ। सूक्ष्म संकल्पों के माध्यम से व्यक्तिशः विकास अणुव्रत का प्रमुख उद्देश्य हैं। अणुव्रत, विद्यार्थी, शिक्षक, व्यापारी, महिला आदि सभी वर्गों हेतु एक नियमबद्ध आचार संहिता के पालन की अनिवार्यता द्वारा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के संतुलित एवं आदर्श विकास का एक व्यापक प्रयास है। अणुव्रत-आन्दोलन द्वारा आचार्य तुलसी ने महात्मा गांधी के समान राम राज्य की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए समस्त मानव समुदाय को जाति, वर्ण, भाषा एवं धर्मगत संकीर्णताओं से उभरकर सत्य, शील, संतोष जैसे उत्तम गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

समाज की महत्वपूर्ण इकाई विद्यार्थियों में संस्कार निर्माण, बौद्धिकता एवं व्यक्तित्व विकास हेतु आचार्य तुलसी ने संतुलित जीवनशैली या जीवन जीने की कला अपनाने का संकल्प प्रस्तुत किया। इस क्रम में जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान की नवीन प्रवृत्ति को विद्यालय से विश्वविद्यालय तक स्थापित करने का व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसके माध्यम

से वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व संपन्न युवा समाज एवं राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में सक्रिय योगदान दे सके।

सारांशतः युगप्रधान आचार्य तुलसी 20वीं शताब्दी के क्रांतिकारी आचार्यों में से एक विलक्षण आचार्य हैं जिनका व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व देश एवं काल की सीमाओं से परे संपूर्ण विश्व के लिए एक अनुकरणीय धरोहर बन गया। आचार्य तुलसी के जीवन का हर आयाम आदर्शमूलक, अनुकरणीय एवं प्रेरक है। आचार्य तुलसी एक प्रयोगधर्मी, सृजनशील एवं बहुआयामी राष्ट्र चिंतन करते हुए संपूर्ण मानव समाज को 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' मानकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की संकल्पना को आत्मसात किया। तत्कालीन सामाजिक परिदृश्य में व्याप्त विसंगतियों के निराकरण हेतु उन्होंने भविष्यद्रष्टा के रूप में सम्पूर्ण समाज को नवीन दिशा प्रदान की। आचार्य तुलसी के बहुआयामी चिंतन का एक आयाम उन्हें सामाजिक क्रांति के पुरोधा के रूप में स्थापित करता है। उनका समाज-दर्शन, विविध सिद्धान्त एवं संस्थाएं आने वाली कई शताब्दियों तक मानव समाज को एक आदर्श समाज की स्थापना हेतु अग्रसर करते रहेंगे।

–सहायक आचार्य
शिक्षा विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं